आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2017
वर्ष 3, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2017, पृ. 33–36

भारतीय मुस्लिमों में सामाजिक संस्तरण

परवेज अहमद अब्बासी*

सामाजिक संस्तरणों में समाज का विभाजन शक्ति, प्रतिष्ठा तथा विशेषाधिकार का कोटि–क्रम निर्मित करती है जो सामाजिक संरचना का एक सार्वभौमिक लक्ष्य है। सामाजिक स्तरीकरण इस पूर्वानुमान पर किया जाता है कि प्रत्येक समाज में शक्ति, प्रतिष्ठा और परितोष के आधार पर असमानता अस्तित्व में होती है (डेविस और मूरे 1966 : 46–53)। यद्यपि भारतीय परिस्थिति जन्म आधारित संस्थागत असमानता की व्याख्या करती है तथापि वर्ग के सिद्धान्त भी स्तरीकरण के निर्धारण में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करने लगे हैं (सिंह, योगेन्द्र 1974)। सामान्यतः इस्लाम के मूल्य पूर्णतावादी है, जातिगत संस्तरण को सैद्धान्तिक रूप से इस्लाम में स्वीकार नहीं किया गया है, और इस्लाम के मूल्य की उत्कृष्टता की जड़ें एकेश्वरवाद के सिद्धान्त में निहित हैं। परन्तु भारतीय मुस्लिमों की स्थिति संकेत करती है कि हिन्दू सामाजिक संरचना अपनी असमानता की प्रकृति को इस्लाम के सामाजिक मूल्यों के साथ अस्तित्व में बनाये हुए है। अशरफ, विवाह और नातेदारी सम्बन्धों को स्थापित करने में सदैव दूरी बनाये रखते हैं विशेष रूप से उन मुस्लिमों से जिन्होंने धर्म परिवर्तन करके इस्लाम स्वीकार किया है और उन्हें कभी भी अपने समान स्वीकार नहीं किया। जाति–आधारित असमानता धर्मान्तरित मुस्लिमों में सतत चली आ रही है। वे अपने परम्परागत जाति संस्कारों का पालन करते हैं और परम्परागत व्यवसाय से जुड़े हुए हैं (सिंह, योगेन्द्र 1973 : 193–194)।

परम्परागत रूप से प्रत्येक मुस्लिम जाति अपने वंशज के स्थान को बनाए रखने का प्रयन्त करती है जो उसे जन्मजात रूप से मिली हुई है। अशरफ अपना उच्च स्थान बनाए रखते हैं किन्तु कसाई और मल्लाह व्यवसायिक जातियां उच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं (अब्बासी, 1981)। निम्न जाति के सदस्य शक्ति और विशेषाधिकार की माँग के कारण उच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न भी करते रहते हैं। जाति और वर्ग के विभिन्न समूह असमान स्तर का प्रदर्शन करते हैं जिसे राजनीति अथवा आर्थिक शक्ति, सामाजिक प्रस्थिति, विशेषाधिकार और पारितोष के आधार पर संस्तरित किया जा सकता है। मुस्लिमों में जाति की तरह के स्वभाव का सिंहावलोकन करना आवश्यक है जिससे कि मुस्लिमों में जाति संरचना के स्वरूप को समझा जा सके। अन्सारी

*प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनीवर्सिटी, सूरत, गुजरात

(1960–64) ने उत्तर प्रदेश के मुस्लिमों का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए अगर उच्च स्तर अर्थात अशरफ वैवाहिक समूहों, जिसे बिरादरी कहते हैं; विभक्त है जो एक नातेदारी समूह का सीमित क्षेत्र पत्नी चयन हेतु बनाती है जिससे कि पूर्वजों की पवित्रता बनाये रखी जाये। वह तर्क देते हैं कि उच्च जाति में परिवर्तित मुस्लिम जैसे कि राजपूत अपने मूल प्रतिलोम विवाह को बनाए रखे है। माइन्स (1971) जिसने उत्तर तमिलनाडू के पल्लावरम कस्बे के तमिल मुस्लिमों के सामाजिक संस्तरण का अध्ययन किया, उनका विचार है कि तमिल मुस्लिम न तो पूर्णतः हिन्दू और न ही दूसरे मुस्लिम धार्मिक समुदायों के समान माने जा सकते हैं यद्यपि सांस्कृतिक रूप से हिन्दू व मुस्लिम तमिल एक दूसरे के बहुत निकट हैं, किन्तु मुस्लिम की ऐकेश्वरता के कारण एक अलग पहचान है जो उच्च और निम्न के सिद्धान्त से परे है किन्तु उनमें भी रावघेट, लाब्बाई, मशकाथार और कायातार जैसे अलग–अलग समूह हैं। माइन्स स्वीकार करते हैं कि कच्चे चमड़े और नमक खाद्य–शोधन के व्यवसाय के कारण कायालार की सामाजिक स्थिति निम्न है। उनका तर्क है कि मुस्लिमों में उपविभाजनों का कोटिक्रम नहीं किया जा सकता परन्तु व्यक्ति के आधार विचार, आयु, आर्थिक स्थिति, धार्मिकता और व्यक्तिगत चरित्र के आधार पर रैकिंग अस्तित्व में है। तमिल मुस्लिमों अतः विवाही हैं और पत्नियों की पसन्द की प्रवृत्ति समान आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों से की जाती है जो रक्त की शुद्धता पर आधारित नहीं है।

अग्रवाल (1971) राजस्थान के मेवो मुस्लिमों में सामाजिक सस्तरज के स्वरूप का अवलोकन कियाा तथा वह जाति को सामाजिक समूह के रूप में स्वीकार करते हैं जो अन्तः विवाही, जन्मजात सदस्यता, दूसरे जातियों के सम्बन्ध जो जातियों की शुद्धता तथा अशुद्धता निर्धारित करती है, जातियों के सोपान को दर्शाते हैं। उनका तर्क है कि मेवो ऊंची जाति से सम्बन्ध रखते हैं हालांकि उनका यह दावा कि प्रतिष्ठित राजपूत जाति के क्षत्रिय वर्ण का धर्मान्तरण के कारण सन्देहप्रद प्रतीत होता है। फिर भी अन्य जातियाँ उन्हें सभी की तरह उच्च मानती हैं। इनके पास भूमि स्वामित्व है और राजनीतिक रूप से ये गांव में प्रभु जाति है। जजमानी व्यवस्था के अन्तर्गत फकीर, सक्का और मिरासी जातियाँ इनको सेवा प्रदान करती हैं।

भट्टाचार्य (1978) पश्चिमी बंगाल में मुस्लिमों में सामाजिक संस्तरण के स्वरूप व जाति की धारणा को ग्रामीण स्तर पर दर्शाते हैं। इनका मत है कि यद्यपि इस्लाम एकेश्वरवाद के सिद्धान्त पर आधारित है फिर भी जाति के सामाजिक विभाजन जैसा हिन्दु में प्रचलित हैं, इसने स्वीकार लिया है। मुस्लिमों के सामाजिक संस्तरण और इसमें कृकृकृकृकृकृकृकृकृ की चर्चा वह सन्दर्भ में करते हैं। यहाँ के सभी मुस्लिम शेख हैं, आर्थिक रूप से इन्हें संस्तरित बारोलोक (धनी) और गरीब (निर्धन) में किया किंतु वह संस्तरीकरण सामाजिक की तुलना में आर्थिक ज्यादा है। वह गांव के शेखों की चर्चा अन्य जातियों से सम्बन्धों के आधार पर करते हैं तथा शाह (फकीर), इस क्षेत्र के मुस्लिमों की एक अन्य जाति है। भट्टाचार्य इन्हें प्रस्थिति समूह मानते हैं क्योंकि उच्चता और नीचता के आधार पर इनको संस्तरित किया गया है। ये नृजातीय समूह (ethnic group) अंतःविवाही है, फिर भी कुछ प्रकरणों में नृजातीय समूह के बाहर भी वैवाहिक सम्बन्ध पाया गया है। हिन्दु जाति व्यवस्था और मुस्लिम सोपान क्रम में मूलभूत अन्तर यह है कि प्रथम परम्परागत हिन्दू वर्ण व्यवस्था पर आधारित है जबकि दूसरे का कोई व्यवस्थित पौराणिक और धार्मिक आधार नहीं है। लीला दूबे (1978) दक्षिण–पश्चिम किनारे के लक्ष्यद्वीप में सामाजिक समूहों का अध्ययन किया तथा इनके विचार भी भट्टाचार्य के समान हैं।

एवं अवलोकन करती है कि द्वीप के मुस्लिमों में जाति की तुलना हिन्दू जाति व्यवस्था से की जा सकती है, फिर भी, अभिमुखता के प्रत्येक स्तर पर समान नहीं है। इनके मतानुसार कोया और मेलवरी परम्परागत रूप से व्यवसायिक समूह हैं दूबे कोटिक्रम मुस्लिमों में जाति कोटिक्रम की संभावनाओं को पवित्रता और अपवित्रता के आधार पर तलाशने का प्रचलन करती है।

सिद्दीकी (1978) कलकत्ता के डाबर के मुस्लिमों के जातीय समूहों (ethnic groups) को पवित्रता और अपवित्रता के आधार पर संस्तरित करते हैं। उनके अनुसार मुस्लिम जातीय समूह अन्तः विवाही है और उनकी सदस्यता जन्म द्वारा निर्धारित होती है। हाइपर मैत्री विशेषतः सैयद और शेख के बीच ही स्वीकार है। जाति समान व्यवस्था स्पष्ट दिखाई देती है जो इस्लाम के वृहद परम्पराओं से लगभग तालमेल बनाये हुए है। यह हिन्दू सामाजिक वातावरण का प्रभुत्व भारतीय समाज बिना किसी आन्तरिक समूह के संचालित होता रहता है।

संस्कार की शुद्धता और अशुद्धता के प्रश्न पर डिसूजा (1973) सहमत नहीं हैं। इन्होंने भारत के दक्षिण–पश्चिम विवाह के मोपलाओं का अध्ययन किया और स्वीकार करते हैं कि मैसूर और केरल में मुस्लिम प्रस्थिति समूह सोपान में विभाजित है किन्तु संस्तरण का आधार रक्त की पवित्रता और अपवित्रता पर आधारित नहीं है। मोपलाओं में संस्तरण का आधार धर्मनिरपेक्ष है जैसे कि हाइपर मैत्री और मेहर (धनराशि जो विवाह के अवसर पर भुगतान करने में आता है)।

मैसेलॉस (1978) दर्शाते हैं कि 20वीं सदी के अर्द्धशतक तक बाम्बे के खोजा मुस्लिम अवश्य जाति समूह थे, इनकी जमात, जाति पंचायत के अलावा अन्य संस्था नहीं है और विल्कुल हिन्दू जाति पंचायत की तरह ही है। इनमें अन्तः विवाही प्रथा पायी जाती है। खोजाओं का विभाजन शिया और सुन्नी खोजा के रूप में मिलता है। आगा खाँ के अनुयायी खोजा अपने आप को शिया जबकि सुधारवादी खोजा सुन्नी होने का दावा प्रस्तुत करते हैं। दोनों समूहो में वैरभाव इतना बढ़ा कि बिरादरी से निकालने, हत्या अलग से वही जमात खाना की स्थापना और सुधालय में मुकदमे जैसी प्रतिक्रियाएं हुई। प्रथम दौर में न्यायालय का फैसला आगा खां के अनुयायियों के पक्ष में रहा और उनके शिया होने की घोषणा की गयी। इससे खोजाओं की एक अलग तत्समक प्राप्त हुई। इस प्रकार आनेवॉस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भारतीय समाज के मुस्लिम धर्म, जाति और पंथ के आधार पर अपनी तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं।

भट्टी, (1978) लखनऊ शहर के निकट कसौली गांव के मुस्लिमों में अशरफ और नान अशरफ जातियों के रूप में संस्तरण पाया। अशरफ जातियाँ ग्राम में प्रभुत्व बनाये हुए हैं तथा एक विशिष्ट व्यवसाय का पालन करती हैं। इनका निष्कर्ष यह है कि कलौसी के मुस्लिमों में सोपान का आधार परम्परागत व्यवसाय है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद का अहमद (1978) अध्ययन दर्शाती है कि शेख और सिद्दीकी का विभाजन दो अन्तः विवाही समूहों में संस्कार की पवित्रता व अपवित्रता के आधार पर हुआ है। वे दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि दोनों वक्त अन्तः वैवाहिक समूहों के बीच अन्तरजातीय वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं होते हैं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण तथा नगरीय गद्दी मुस्लिमों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि गद्दी अन्तः विवाही समूह हैं तथा सब्जी उगाने तथा दूध व्यवसाय से आज भी दृढ़ता से जुड़े हुए हैं। तथ्य दर्शाते हैं कि नगरीय गद्दी भी स्वयं को परम्परागत व्यवसाय से पृथक नहीं कर सके। नगरीय

प्रभाव से इस जाति के कुछ परिवार व्यवसाय के आधुनिकीकरण जैसे शीतगृह के निर्माण द्वारा भाड़े पर आलू रखने के कार्य की तरफ गतिशील हुए हैं किन्तु परम्परागत व्यवसाय भी उनमें विद्यमान हैं तथा सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में परम्परागत व्यवसाय की प्रबल भूमिका अब भी दृष्टिगोचर होती है परन्तु इस सन्दर्भ में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है कि व्यवसाय के आधुनिकीकरण अथवा अपरम्परागत व्यवसाय से सम्बन्ध व्यवसायों द्वारा समृद्ध परिवार, बिरादरी में 'प्रस्थिति समूह' (स्टेट्स ग्रुप) के रूप में उभरने लगे हैं तथा अपने नामों में गाजी प्रत्यय लगाने की है। (अब्बासी, 1999)।

उपरोक्त अध्ययनो के सिंहावलोकन से स्पष्ट है कि यद्यपि इस्लाम के मूल्य समानता और भाईचारा पर बल देते हैं और जातिगत असमानता को स्वीकार नहीं करते, फिर भी, भारत के विशिष्ट सन्दर्भ में, जाति की संरचना का सोपान (आन्तरिक एवं वाह्य) मुस्लिम सामाजिक संरचना में पैठ जमाए हुए हैं। इस विरोधाभास परिस्थिति को समझने हेतु वर्गीकर, संरचना से संस्कृति को अलग देखना एक विश्लेषण की प्रविधि हो सकती है किन्तु इस समस्या की गहन सोच एक नवीन अध्ययन की अभियाचना करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Abbasi, Parvez A. 1999: Social Inequality Among India Muslims, New Delhi: AC Brothers.

Aggarwal, Pratap C., Caste, Religion and Power: *An Indian Case study*, Sri Ram Centre for Industrial Relations, New Delhi, 1971.

Bhattacharya, Ranjit K. "The Concept and Ideology of Caste Among Muslims of Rural West Bengal", in (ed.) Imtiaz Ahmad. *Caste and Social Stratification Among Muslims in India*, Manohar, Delhi, 1978.

Bhatti, Zarina 1978 "Status and power in a Muslim Dominated village of Uttar Pradesh" in caste and social stratification among the Muslims, Manohar Book Service,

Davis, K. & W.E. Moore, "Some Principle of Stratification" in (ed.) R. Bendix and S.M. Lipset, *Class, Status and Power*, Free Press, New York, 1966.

Dube, Leela, "Caste Analogues Among the Laccadive Muslim", In (ed.) Imtiaz Ahmad, *Caste and Social Stratification Among Muslims in India,* Manohar, Delhi, 1978.

D'Souza, V.S., "Status Groups Among the Moplahs on South West Coast of India", in (ed.) Imtiaz Ahmad, *Caste and Social Stratification Among Muslims in India*, Manohar, Delhi, 1978.

Maines, M., "Social Stratification Among Muslim Tamils in Tamil Nadu, South India", in (ed.) Harijinder Singh, *Caste Among Non-Hindus in India*, National Publishing House, New Delhi, 1977.

Masselos, J.C., "The Khojas of Bambay: The defining of Formal Membership During the Nineteeth Century", in (ed.) Imtiaz Ahmad, *Caste and Social Stratification Among Muslims in India*, Manohar, Delhi 1978.

Siddiqui, M.K.A., "Caste Among the Muslim of Calcutta", in (ed.) Imtiaz Ahmad, *Caste and Social Stratification Among Muslims in India*, Manohar, Delhi, 1978.

Singh, Yogendra, *Modernization of Indian Traditions*, Thomson Press, New Delhi, 1973.

_____, "Sociology of Social Stratification, and Concepts and Theories of social Change" in *A Survey of Research in Sociology and Social Anthropology*, Vol. 1, pp. 311 – 82, Popular, Bombay, 1946.